National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2022; 1(40): 36-39
© 2022 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. पूजा
श्री लाल बहादुरशास्त्री राष्ट्रिय-
संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

Correspondence:
डॉ. पूजा
श्री लाल बहादुरशास्त्री राष्ट्रिय-
संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

बौद्धों की उपाय कौशल्य पारमिता की आधुनिक समय में प्रासंगिकता

डॉ. पूजा

सारांश-

उपाय कौशल पारमिता बोधिसत्त्व के उपदेश तथा उपाध्याय कर्म से सम्बद्ध है। बोधिसत्त्व को अबन्ध्य धर्म देशक होना चाहिए। शतसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता के अनुसार सभी पारमिताओं की पूर्णता देशना से ही होती है। दशभूमिकसूत्र से यह स्पष्ट है कि बोधिसत्त्व पाँचवी भूमि सुदुर्जया में परम उपदेष्टा बन जाते है। देशना और अध्यापन ही बोधिसत्त्व का धर्मदान है। उपायकौशल्य पारमिता का लक्ष्य है – कलहपूर्ण मनुष्यों को धर्म देशना के उपायों से नव जीवन प्रदान करना। इस पारमिता का विनियोग दान, प्रियवादिता, धर्मोपदेश एवं अलौकिक शक्ति सामर्थ्य से कल्याण मार्ग के निर्देशन में होता है। बोधिसत्त्व उन लोगों की अन्तश्चेतना को अपने शोभन धर्मपदेश से जीत लेते हैं जो सांसारिक प्रपञ्चों में डूबे रहते हैं। वे उस महाभाषिक् की तरह होते हैं जो विभिन्न रोगों से ग्रस्त विभिन्न व्यक्तियों को औषधोपचार से रोगमुक्त करते हैं। आज के सामजिक वातावरण को देखते हुए समाज में उपायकौशल्य की अति आवश्यकता है।

समाज में सर्वत्र ही हिंसा, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि बुराइयों ने अपने पैर पसार रखें है। इन बुराइयों को समाज से हटाने के लिए समाज को कलहयुक्त वातावरण से दूर करने के लिए उपायकौशल्य की अति आवश्यकता है। मनुष्य जब धर्म देशना के उपायों को जीवन में धारण करेगा तब मनुष्य अपने जीवन में नवस्फूर्ति को प्राप्त करने में समर्थ होगा।

बीज शब्द-

१- उपाय कौशल्य पारमिता
२- संग्रहवस्तु
३- प्रतिसंविद्
४- धारणी
५- बोधिसत्त्व

उपायकौशल्य पारमिता -

चार पूरक पारमिताओं में उपायकौशल्य पारमिता का महत्तम स्थान है। सद्धर्मपुण्डरीक में भगवान् बुद्ध कहते हैं-

उपाय कौशल्य ममेतदग्रं भाषामि धर्मं बहु येन लोके।
तहिं तहिं लग्न प्रमोचयामि त्रीणि च यानान्युपदर्शयामि॥[1]

उपाय कौशल पारमिता बोधिसत्त्व के उपदेश तथा उपाध्याय कर्म से सम्बद्ध है। बोधिसत्त्व को अबन्ध्य धर्म देशक होना चाहिए। शतसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता के अनुसार सभी पारमिताओं की पूर्णता देशना से ही होती है। दशभूमिकसूत्र से यह स्पष्ट है कि बोधिसत्त्व पाँचवी भूमि सुदुर्जया में परम उपदेष्टा बन जाते है।[2] देशना और अध्यापन ही बोधिसत्त्व का धर्मदान है। उपायकौशल्य पारमिता का

लक्ष्य है – कलहपूर्ण मनुष्यों को धर्म देशना के उपायों से नव जीवन प्रदान करना। इस पारमिता का विनियोग दान, प्रियवादिता, धर्मोपदेश एवं अलौकिक शक्ति सामर्थ्य से कल्याण मार्ग के निर्देशन में होता है। बोधिसत्त्व उन लोगों की अन्तश्चेतना को अपने शोभन धर्मपदेश से जीत लेते हैं जो सांसारिक प्रपञ्चों में डूबे रहते हैं। वे उस महाभाषिक् की तरह होते हैं जो विभिन्न रोगों से ग्रस्त विभिन्न व्यक्तियों को औषधोपचार से रोगमुक्त करते हैं। साधना में प्रौढ बोधिसत्त्व शून्यता के गहन सिद्धान्तों से लोगों को संत्रस्त नहीं करते। दूसरों की सहायता के लिए बोधिसत्त्व मृषावाद की भी सहायता ले सकते हैं।

उदेष्टा के रूप में बोधिसत्त्व को शील नैपुण्य को प्राप्त करना पडता है। उन्हें धैर्यधुरीण तथा असांसारिक होना पडता है। आवश्यकता पडने पर वे प्राणोत्सर्ग से विमुख नहीं होते। अपने कर्म की पूर्णता के लिए बोधिसत्त्व को तीन वस्तुओं की अपेक्षा होती है- संग्रहवस्तु, प्रतिसंविद् तथा धारिणी।

१.संग्रहवस्तु-

संग्रहवस्तु का अर्थ है- मित्रभाव का पदार्थ, प्रसिद्धि का तत्त्व, सहकारत्व, दया। चार संग्रहवस्तुओं का उल्लेख पालि निकायों में सर्वत्र हुआ है जिनमें **दानं, पेयवज्जं, अत्थचरिया तथा समानत्तता** परिगणित हैं।[3] संस्कृत में संग्रहवस्तुओं के नाम इस प्रकार हैं- दान, प्रियवाद्य (प्रियवचन, प्रियवाक्य, प्रियवाद्यता, प्रिय आख्यान, प्रियवाद्यम्), अर्थचर्या(विलक्षण आचरण) तथा समानार्थता।

दान देकर बोधिसत्त्व निस्पृहता का अधिगम करते हैं। उपदेश के क्रम में वे **प्रियवादिता** का आश्रय लेते हैं क्योंकि प्रियवादिता से सत्त्वों के अन्तः करण जीते जाते हैं। **अर्थचर्या** में बोधसत्त्व पुण्यात्मक कार्यों के द्वारा दूसरों की सहायता के लिए धन का अर्जन भी करते हैं। बोधिसत्त्व प्रासादिक वृत्ति से युक्त तथा काय एवं मन से पूर्णतः शान्त रहते हैं। जिन लोगों ने कभी कुशल कर्म नहीं किया है उन लोगों को वे कुशल कर्म करने की देशना एवं प्रेरणा देते हैं तथा स्वयं उस कर्म का सम्पादन करते हैं। वे सर्वतोमुखी सेवा-भावना के द्वारा अश्रद्धालुओं में श्रद्धा, दुष्टों में शील मूर्खों में ज्ञान तथा स्वार्थप्रवृत्ति वालों में दानभावना का संचार करते हैं। **समानार्थता** शब्द का अर्थ है- समान कर्म, अपक्षपात दूसरों में हिस्सा बटाना। बोधिसत्त्व जैसा दूसरों को करने के लिए प्रेरित करते हैं वैसा स्वयं करते हैं- यही बोधिसत्त्व की समानार्थता है। सौन्दरनन्द तथा महावस्तु में समानार्थता का अर्थ है- समान दुःखता, अर्थात् दूसरों के दुःख में दुःखी तथा दूसरों के सुख में सुखी होना।

संग्रहवस्तुओं का एकमात्र लक्ष्य है जीवित प्राणियों का सम्परिवर्तन(धर्मपरिवर्तन)। संग्रहवस्तुओं को दो वर्गों में बांटा गया है- १) आमिष संग्रह, २) धर्मसंग्रह। दानवस्तु भौतिक द्रव्यों पर निर्भर है क्योंकि भौतक द्रव्यों के अभाव में दान कर्म की सफलता संभव नहीं है। अन्य तीन (प्रियवादिता, अर्थचर्या तथा समानात्मता) आध्यात्मिक मूल्यों के उत्कर्ष हैं। प्रियवादिता, अर्थचर्या तथा समानात्मता से आध्यात्मिक भावनाओं का परिष्कार होता है।

२.प्रतिसंविद्-

बोधिसत्त्व को चार प्रतिसंविदाओं को प्राप्त करना पडता है। प्रतिसंविद् शब्द के अनेक अर्थ विद्वानों के द्वारा परिकल्पित हैं। प्रतिसंविद् के अर्थ हैं – किसी वस्तु के वैशिष्ट्य का यथार्थ बोध,[4] निर्वचनात्मक अन्तर्दृष्टि, विभेदात्मक ज्ञान एवं भाष्य-शक्ति, सभी धर्मग्रन्थों का विभेदात्मक ज्ञान,[5] निर्वचनात्मक विज्ञान, अपरिमितज्ञान।

प्रतिसंविदाएँ चार हैं – धर्मप्रतिसंविद्, अर्थप्रतिसंविद्, निरुक्तिप्रतिसंविद् तथा प्रतिभान प्रतिसंविद्।

धर्मस्योद्देशनात्सर्वथा प्रापणाद द्वयोः।
परिज्ञानाच्च चोद्यानां प्रतिसम्विश्चतुष्टयम्।।[6]

इन चतुर्विध प्रतिसम्विदाओं में धर्म, अर्थ को एक साथ तथा निरुक्ति तथा प्रतिभान को एक साथ महायान ग्रन्थों से उद्धृत किया गया है।

धर्मप्रतिसम्विद् - धर्मप्रतिसम्विद् सभी धर्मों के परिपूर्णज्ञान को कहते हैं जिसके द्वारा बोधिसत्त्व सभी धर्मों के रूप, अस्तित्व तथा लक्षण को जानते हैं। दूसरे द्वारा बोधिसत्त्व धर्मी के लक्षण, अभाशरीर प्रत्युत्पन्न विभक्ति तथा धर्मप्रभेद को जानते हैं वे धर्मीज्ञान की असंभेद विभक्ति को जानते हैं और एकनय के द्वारा वे यह भी जानते हैं कि धर्म अविकोप्य एवं अचल है। उनको यह भी ज्ञान होता है कि सभी यान एक साथ सम्बद्ध होते हैं और वे बोधिसत्त्व के सभी आध्यात्मिक कर्त्तव्यों के ज्ञान में प्रवेश पाते हैं। तथागत के सभी लक्षणों का अनुबोध प्राप्त कर बोधिसत्त्व बुद्ध-वाणी, बल , वैसारद्य, बुद्धधर्म महाकरुणा, प्रतिसंविद् योग, सर्वज्ञ ज्ञान तथा धर्मचक्र प्रवर्तन को जान लेते हैं।

अर्थप्रतिसंविद् - अर्थप्रतिसंविद् के द्वारा बोधिसत्त्व सर्वलक्षणों से युक्त सभी धर्मों के पूर्ण ज्ञान को जानते हैं। इसके द्वारा वे अतीत, अनागत धर्मों की विभक्ति (वर्गीकरण) उदय तथा अस्तंगमन को जानते हैं, अर्थप्रभेद को जानते हैं तथा अन्वययज्ञान, स्कन्ध, धातु, आयतन, चार आर्यसत्य एवं प्रतीत्यसमुत्पाद को जानते हैं।

निरुक्तिप्रतिसंविद् - निरुक्ति का अर्थ है 'निर्वचन' किन्तु महायान सूत्रालङ्कार के अनुसार विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली

विभिन्न भाषाओं के ज्ञान को निरुक्तिप्रतिसम्विद् कहा गया है। बोधिसत्त्वभूमि में 'निर्वचनेषु' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिससे यह ध्यातव्य है कि धर्मों की प्रवृत्तियों एवं अस्तित्वों के निर्वचन में व्युत्पत्त्यात्मक एवं भाषावैज्ञानिक व्याख्याओं का पूर्णज्ञान ही निरुक्ति प्रतिसंविद् है। इस प्रतिसंविद् के माध्यम से बोधिसत्त्व प्रसम्भेद (अमिश्रित एवं पवित्र) देशना के सिद्धान्तों को जानते हैं तथा अतीत अनागत एवं प्रतीत्यसमुत्पन्न धर्मों का असम्भद (अमिश्रित) उपदेश देते हैं। वे सर्वजनग्राह्य मधुर भाषा में अन्यभेद के बिना सभी यानों तथा पारमिता की अवस्था तथा समाधि मार्ग का उपदेश देते हैं।

प्रतिभानसम्विद्- प्रतिभान शब्द दो रूपों में प्राप्त होता है – प्रतिभान तथा प्रतिभाण। प्रतिभान का शाब्दिक अर्थ है – ज्ञान , बुद्धि। इसके अन्य अर्थ भी इस प्रकार हैं- अन्तःप्रज्ञा, अवबोध, निर्वचन क्षमता, वाक्चातुर्य में विश्वास। प्रभावशाली भाषण में भाषा के सांगोपांग ज्ञान (निरुक्ति) की महत्ता होती है। तथा भाषण क्षमता के अभ्युत्साह एवं शक्तिमान के लिए प्रतिभान (अन्तः प्रज्ञा) की सर्वत्र अपेक्षा होती है। विशेषतः प्रतिभान शब्द भाषणोत्साह का ही द्योतक है। ललितविस्तर के अनुसार प्रतिभान धर्मप्रकाश का द्वार है जो उत्तम वाक् के द्वारा सभी प्राणियों की प्रसन्नता के लिए प्रयुक्त होता है।

३.धारणी –

धारणी शब्द के अर्थ हैं – स्थिरता, सरा, धमनी, श्रेणी, पंक्ति। बौद्ध धर्म में धारणी का अर्थ मन्त्र या तन्त्रबल है। महायान में यहा धारणा है कि मन्त्रबल (धरणी) से अमङ्गल का विनाश होता है तथा आपत्तियाँ समाप्त होती जाती हैं। बोधिसत्त्व सर्वथा रोगमुक्त एवं अभेद्य होते हैं, शस्त्र उन्हें आक्रान्त नहीं करते तथापि वे विशिष्ट प्रकार के रक्षा-साधनों से अभ्युपेत रहते हैं। सद्धर्मपुण्डरीक में 'धारणी' को रक्षा, आवरण एवं गुप्ति के लिए प्रयोज्य बताया गया है –

'रक्षावरण गुप्तये धारणीमन्त्रपदानि'।[7]

बोधिसत्त्व को धारणी से वैशारद्य की प्राप्ति होती है। प्रौढ बोधिसत्त्वों को धारणीप्रतिलब्ध की संज्ञा दी जाती है।

आज के सामजिक वातावरण को देखते हुए समाज में उपायकौशल्य की अति आवश्यकता है। समाज में सर्वत्र ही हिंसा, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि बुराइयों ने अपने पैर पसार रखें है। इन बुराइयों को समाज से हटाने के लिए समाज को कलहयुक्त वातावरण से दूर करने के लिए उपायकौशल्य की अति आवश्यकता है। मनुष्य जब धर्म देशना के उपायों को जीवन में धारण करेगा तब मनुष्य अपने जीवन में नवस्फूर्ति को प्राप्त करने में समर्थ होगा।

जीवन को सुसमृद्ध बनाने के लिए मानव को अपने व्यवहार में परिवर्तन की अवश्यकता है। मानव को अपने व्यवहार में दानशीलता को लाना होगा। जरूरतमंदों की सहायता के लिए सर्वदा अग्रसर होना होगा। बोली में मधुरता का समावेश करना होगा। मधुरवाणी से मानव समस्त कर्यों को करवाने में सक्षम होते हैं। लोगों में अपने प्रति सम्मान की भावना मधुरवाणी से ही प्राप्त कर सकते हैं। इसीलिए जीवन में प्रियवादिता का अत्यधिक महत्त्व होता है। मनुष्य धर्म के पथ पर चलकर ही कैवल्य के मार्ग की ओर अग्रसर हो सकता है। अपने धर्म का पालन करना मानव का प्रथम कर्तव्य होता है। एवं धर्म के द्वारा ही कल्याण के मार्ग की प्राप्ति हो सकती है।

अतः मानव अपने द्वारा किए गए कर्मों के द्वारा ही अपने जीवन में सुख, दुख इत्यादि को प्राप्त करता है। कर्मवाद बौद्धों की विशेषता है। संसार में गरीबी और अमीरी की जो खाई बनी हुई है ऊँच-नीच, दरिद्र – धनवान, में जो दो किनारे निर्मित हैं उन सभी का मूलकारण हमारे कर्म ही हैं।[8] इसीलिए माणवक को भगवान ने कहा था कि प्राणी कर्मस्वक हैं, कर्मदायद, कर्मयौनि, कर्मबन्धु, और कर्मप्रतिशरण हैं –

कम्मस्सका माणव सत्ता कम्मदायादा कम्मयोनी कम्मबन्धु कम्मपटिसरणा कम्मं सत्ते विभजति यदिदं हीन-पणीतताया'ति।[9]

जहाँ प्राणियों को धर्मदायाद और कम्मदायाद बनने के लिए कहा गया है वहीं यह भी कहा गया है कि संसाररूपी अगाध समुद्र में परिभ्रमण कराने वाला प्रतीत्यसमुत्पाद भी कर्मचक्र ही है। कर्म से फल उत्पन्न होता है और फल कर्म से उत्पन्न होता है। कर्म से पुनर्जन्म होता है और यही भव भ्रमण कराने में कारण है।

कम्मा विपाका वत्तन्ति विपाको कम्मसम्भवो।
कम्मा पुनब्भवो होति एवं लोको पवत्तती॥[10]

कर्म को संसार का कारण स्वीकार करने पर ईश्वर को सृष्टिकर्ता – हर्ता अथवा सुख दुखादि के दाता के रूप में मानने की अवश्यकता नहीं रह जाती इसलिए भगवान् ने स्वयं को न सर्वज्ञ माना है, और न ईश्वर को। उन्होंने तो अपने आपको पथप्रदर्शक अथवा दीपक के रूप में स्वीकार किया है। बाकी परिश्रम तो प्राणी को स्वयमेव करना पडेगा। स्वयंकृत परिश्रम के बिना और कोई तारक नहीं हो सकता।[11]

इसीलिए जीवन में उपाय कौशल के महत्व को अत्यधिक स्वीकार किया गया है। उपायकौशल को अपनाकर ही मानव कर्मों को करते हुए इस संसाररूपी भव सागर से पार उतर सकता है।

संदर्भग्रन्थसूची –

१.अंगुत्तर निकाय द्वितीय भाग : अनुवादक एवं संपादक – स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, प्रकाशन - बौद्ध भारती वाराणसी , प्रकाशन- २००२

२.दशभूमिकसूत्र : संपादक-वैद्यपाह्वश्रीपरशुरामशर्मा, प्रकाशन्-मिथिलाविद्यापीठ, संस्करण-१८८३

३.दीघनिकाय : संपादक- स्वामी द्वारिका दास शास्त्री, प्रकाशन-बौद्धभारती, वाराणसी, संस्करण-१९९६

४.धम्मपद : संपादक- छिमेजरिंगजिन्लामा, प्रकाशनकेन्द्रीयौच्च-शिक्षा संस्थान तिब्बत, संस्करण- १९७२

५.पालि डिक्शनरी : लेखक- रीज डेविड्स

६.मज्झिमनिकाय : संपादक- स्वामी द्वारिका दास शास्त्री, प्रकाशन- बौद्धभारती, वाराणसी, संस्करण-१९९३

७.महायानसूत्रालंकार : संपादक- असंग/सुरेखा वी. लिमए, प्रकाशन – इंडियन बुक सेंटर, संस्करण-१९९२

८.विभङ्गपालि : सम्पादक – भिक्षु जगदीश कश्यप, प्रकाशन- नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, प्रकाशन- १९६०

९.सद्धर्मपुण्डरीक : अनुवादक- डॉ. राममोहन दास, प्रकाशन-बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, संस्करण-२००१

१०.संस्कृत डिक्शनरी : लेखक - मोनियर विलियम्स, प्रकाशन-ऑक्फोर्ड, संस्करण-१९९९

सन्दर्भाः –

[1] सद्धर्मपुण्डरीक, उपायकौशल्यपरिवर्त गाथा-२१, पृ.३६

[2] धर्मभाणकों भवति (दशभूमिक सूत्र पृ. ४६)

[3] दीघनिकाय ३.१५२.१६, अंगुत्तर निकाय, २.३२.३२

[4] संस्कृत डिक्शनरी,मोनियर विलियम्स

[5] पालि डिक्शनरी:रीज डेविड्स

[6] महायानसूत्रालंकार, बोधिपक्षाधिकार

[7] सद्धर्मपुण्डरीक, धारणीपरिवर्त, पृ. ४०७

[8] मज्झिमनिकाय, चूलकम्मविभंग-सुत्तन्त

[9] मज्झिमनिकाय, चूलकम्मविभंग-सुत्तन्त

[10] विभङ्ग पृष्ठ. ४२६

[11] तुम्हेहि किच्चं आत्तप्पं अक्कातारो तथागता। (धम्मपद २०.४)